"1 राजस्थानी"

कवि ने राजस्थानी भाषा की महिमा का वर्णन करते हुए बताया है कि राजस्थानी भाषा राजस्थान प्रदेश के ढाई करोड़ लोगों के मध्य बोली जाने वाली एक सशक्त भाषा है। जिसके प्रत्येक शब्द में वीरता, साहस, त्याग और बलिदान के भाव निहित है। जो वीरो में वीरोचित भावनाओं का संचार करती है युद्ध के प्रति प्रेरणा देती है आत्म रक्षा का पाठ पढ़ाती है यदि कायर भी इस भाषा के बोलो को सुनता है तो उसके रक्त में भी उबाल आने लगता है ऐसी महान भाषा होते हुए भी आज इस भाषा को अपनी मान्यता के लिये नित-नई सरकारों के आगे झुकना पड़ा है यही वह भाषा है जिसमें वीरों को शत्रुओं से वीरोचित युद्ध की लड़ने की प्रेरणा दी है

मातृभूमि की रक्षा और स्वाभिमान का पाठ पढाया है तो वीर नारीयों को सती होने की प्रेरणा देती है तो यहां की वीर माताएँ इसी भाषा के माध्यम से बेटों को झुले मे ही लोरी के माध्यम से बड़ा होने की प्रेरणा और युद्ध मे शत्रुओं को मारकर वीर गति को प्राप्त होने का संदेश देती है तो यही भाषा वीरों को सुख के क्षणों को त्यागकर सदैव वचन पालन निमित युद्धरत रहने की प्रेरणा देती है। इसी के कारण कई वीरो ने विवाह के बन्धनों को चंवरी मे ही छोड़कर युद्ध क्षेत्र मे प्रस्थान

Scanned by CamScanner

किया है राजस्थानी भाषा के छन्दों में वो तेज है कि एक छन्द मात्र पर व्यक्ति अपने प्राण तक न्योछावर करने को तैयार हो जाता है।

इसी महान भाषा में कवि बरछन्द ने पृथ्वीराज रासौ नामक महान ग्रन्थ की रचना की है जो एक वीर प्रशस्ति काव्य है जिसमें पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन है तो महाराणा प्रताप ने जब अकबर से युद्ध से पूर्व संधि करने का प्रयास किया तभी राजस्थानी भाषा के कवि द्वारा गाये छन्दों ने महाराणा प्रताप की भावना को जकझोर दिया। तभी उन्होंने संधि रूपी कायरता पूर्ण कार्य को त्यागकर रणभूमि में युद्ध कर मातृभूमि की रक्षा का संकल्प किया और महाराणा प्रताप ने कवि के वचनों को स्वीकार कर रणभूमि में मौत को गले लगाना उचित समझा। इतनी महान भाषा होते हुए भी आज राजस्थानी को अपनी लाज बचाने के लिये दूसरो के सामने सिर झुकाना पड़ रहा है।

2. बिरखा बीनणी"

देवतदान चारण ने प्रकृति काव्य से सम्बन्धित कविता बिरखा बीनणी में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है कि वर्षा ऋतु के आने पर वातावरण में क्या कुछ परिवर्तन होता है और किस प्रकार की ऋतु है। इसका अत्यन्त आलम्बन रूप में सटीक वर्णन किया है कि ग्रीष्म ऋतु के पश्चात वर्षा ऋतु का आगमन होता है और वर्षा ऋतु

Scanned by CamScanner

में बादल आसमान में छाने लगते हैं जो पहले हल्के व कम काले होते हैं तब ऐसा लगता है मानो वर्षा ऋतु का बचपन है लेकिन धीरे-धीरे यही बादल गहरे काले और पूरे आसमान में छा जाते हैं तब ऐसा लगता है कि वर्षा ऋतु अपने पूर्ण यौवन में ही और बादलों का काला रंग ऐसा लगता है जैसे वर्षा ऋतु में 'काली चुनरी ओढ़ रखी हो। और बादलों के टकराने पर बिजली की गड़गड़ाहट, बिरखा बीनणी के पूर्ण शृंगार और पायजेब की धून का एहसास कराती है

इस प्रकार पूर्ण शृंगार एवं यौवन के साथ बिरखा बीनणी अपने प्रियतम धरती भूमि से मिलने के लिये आतुर होकर गरजने व बरसने लगती है। बिरखा का चंचल यौवन उसे एक स्थान पर स्थिर भी नहीं रहने देता जिसके कारण बिरखा यहां वहां मिलने का प्रयास करती है वर्षा ऋतु का यह खेल कब शुरू हो और कब खत्म हो इसका कोई निश्चित समय नहीं होता है बस वो तो जब आती है अपने पूर्ण यौवन से आती है चारों तरफ बारिश की झड़ी लगा देती है। चारों तरफ पानी ही पानी हो जाता है और एक खुशहाली का रूप दिखाई देता है इस कवि ने इस तीव्रता के माध्यम से अपने भाव अभिव्यक्त किये हैं।

Scanned by CamScanner